



सम्पादकीय

निर्वैर होने के लिए तृष्णाक्षय आवश्यक

डॉ.पुष्पेंद्र दुबे

गौतम बुद्ध का मुख्य कार्य तृष्णाक्षय है। करुणा भाव की मुख्य कसौटी तृष्णाक्षय है। आज समाज में करुणा कार्य बहुत चल रहा है गरीबों को सुखी करने के लिए अनेक जतन किये जा रहे हैं, तो दूसरी ओर धनवानों के चित्त में भी शांति नहीं है। इसका मतलब है दोनों की वासना बढ़ती जा रही हैं। जिसके मूल में तृष्णा या अनंत इच्छाएं ही हैं। तृष्णा और हिंसा का अन्योन्य सम्बन्ध है। अहिंसा की स्थापना के लिए तृष्णाक्षय आवश्यक है। विकास की आधुनिक अवधारणा में मनुष्य समाज का विश्वास हिंसक साधनों पर बढ़ता जा रहा है। इससे दुनिया भयग्रस्त हो गयी है। इसलिए गौतम बुद्ध के विचारों की तरफ दुनिया आशाभरी निगाह से देख रही है। मानव हृदय की भावना ही अवतार में रूपांतरित होती है। हम बौद्धावतार में हैं। हम हर एक धर्मकार्य बौद्धावतारे से शुरू करते हैं। गुअतम बुद्ध ने स्पष्ट शब्दों में कहा था भाइयों, वैर से वैर कभी शांत नहीं होता। कितनी भी कोशिश करो, अग्नि के शमन के लिए घी नहीं, पानी ही चाहिए। वैर से वैर शांत नहीं हो सकता। प्रारम्भिक जीवन में गौतम बुद्ध को उनके पिता ने उन्हें दुखों से दूर रखा। इसके बाद भी उन्हें दुःख का दर्शन हुआ उन्हें तत्काल अपने सुख बनावटी प्रतीत हुए उन्होंने विचार किया कि सुखों के लिए दुनिया के लोगों को कष्ट देना पड़ते हैं। इसीलिए उन्होंने घर छोड़ा और तपस्या की। उन्होंने विचार किया ऐसी दुःखी दुनिया का

दुःख कायम रखकर हम जीवित नहीं रह सकते। दुःख का विनाश कैसे हो ? इसका मार्ग ढूँढते हुए चिंतन करते रहे। उन्होंने चालीस उपवास किए। वहां एक गडरिये की लड़की रोज उन्हें देखती थी। वह हाथ में दूध का कटोरा लेकर इधर-उधर घूमा करती थी। यह सोचकर कि कहीं इन्हें भूख लगेगी तो फौरन दूध दे दूंगी। चालीस दिन बाद उनके अंतःकरण में कारुण्य का उदय हुआ। तब उन्होंने कहा कि अब उपवास की जरूरत नहीं। यह कहकर उन्होंने आंखें खोली, तो लड़की दूध का कटोरा लेकर तैयार थी। समस्या का जो हल गौतम बुद्ध ने चालीस दिन उपवास कर निकाला, वह उस लड़की ने बिना तपस्या के निकाला। तब उन्होंने कहा कि दुःख के निवारण के लिए तपस्या की नहीं करुणा की जरूरत है। गौतम बुद्ध को दुःख परिहार के चार साधन मिले - मैत्री, करुणा, मुदिता और उपेक्षा। इसका आशय यह है कि दुःखियों के लिए करुणा, सुखियों के साथ मैत्री, पुण्यवानों को देखकर आनंद और पापियों की उपेक्षा यानी दूसरों के पाप की तरफ ध्यान न देना। उपेक्षा ही पापनिर्मूलन का तरीका है। गौतम बुद्ध ने तृष्णा दुःख का मूल कारण है यह कहकर उन्होंने वासना पर प्रहार किया। दुःख मुक्ति जीवन का परम उद्देश्य है। बुद्ध ने समझाया कि दूसरों को दुःखी बनाकर सुखी नहीं हो सकते। आज कम-ज्यादा ताकत वाले सारे देश एक-दूसरे से भयभीत हैं। अमेरिका और रूस जैसे बड़े देश भी डरने लगे हैं। इसीलिए गौतम बुद्ध



का निर्वैरता का संदेश अत्यावश्यक है। गौतम बुद्ध ने तीन बातें मनुष्य समाज के सामने रखीं : वैर से वैर नहीं मिटता, तृष्णा क्षय और बुद्धि की कसौटी पर कसना। जब तक वैर के कारण नहीं मिटते, तब तक वैर नहीं मिट सकता। विज्ञान के जमाने में संकुचित भावना शोभा नहीं देती। आवश्यकताएं बढ़ाने से दुःख बढ़ रहा है। यह मृगजल है। तृष्णा से वैर अवश्य बढ़ेगा। हर चीज को बुद्धि की कसौटी पर कसना चाहिए। लोकजीवन में सुधार, परिवर्तन, लोगों में क्रांति लाना आदि काम सरकारी शक्ति से नहीं हो सकता। अगर राजनीति से काम होने वाला होता तो महात्मा गौतम बुद्ध राजपुत्र ही थे। राज्य के द्वारा सब काम हो सकते तो वे राज्य सत्ता क्यों छोड़ते। राजपुत्र होते हुए भी वे घर छोड़कर गए और आध्यात्मिक विचार सभी को समझाते गए। अगर वे राजनीति के पचड़े में पड़ते तो उन्हें कौन याद करता। सम्राट अशोक को आज भी याद करते हैं। जो धर्म दुनिया में और विचार में क्रांति लाने वाला है, वह राजसत्ता के जरिये फैल नहीं सकता। इसलिए बुद्ध को राज्य छोड़ना पड़ा। जब से राजसत्ता धर्म के साथ जुड़ गयी, तब से धर्म की अत्यंत हानि हुई है। इसलिए राजसत्ता के जरिये सद्विचार या सद्धर्म फैल सकता है, यह कल्पना ही उलटी है। अंधकार और सूर्यनारायण एक साथ नहीं रह सकते। दूसरों पर सत्ता चलाना धर्म विचार नहीं है। बुद्ध का मूल कार्य जातिभेद निरसन नहीं था। गौतम बुद्ध हिंदू ही जनमे थे और हिंदू ही निर्वाण को प्राप्त हुए थे। उन्होंने किसी नये धर्म की स्थापना का विचार नहीं किया। वह बाद में धीरे-धीरे पंथ बना। बौद्ध धर्म शून्यवादी है, गीता ब्रह्मवादी। लेकिन शून्य और ब्रह्म में फरक नहीं है। आत्मस्मृति जागते ही अन्य स्मृतियां खत्म हो

जाती हैं। गीता ब्रह्म का नाम लेती है, बौद्ध निषेधक भाषा बोलते हैं। अंधकार का मिटना और प्रकाश का आना अलग-अलग नहीं है। हिंदूओं का ब्रह्मनिर्वाण और बौद्धों के निर्वाण में कोई अंतर नहीं है। (संकलित : विनोबा साहित्य)